जनजातीय अध्ययन पीठ, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित

एवं

भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद द्वारा प्रायोजित

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय जनजातीय समुदाय : पहचान एवं सांस्कृतिक विरासत

26 – 28 मार्च, 2018

सेमिनार कक्ष, धौलाधार परिसर, हिमाचल प्रकश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति का बहुत ही विशिष्ट स्थान है । यह भारतीय संस्कृति की ही विशेषता है कि विभिन्न भाषा, खान-पान, रीति-रिवाज, जलवायु होने के बाद भी एकात्मभाव देखने को मिलता है। कालांतर में अनेकों विदेशी आक्रमणों का सहस्त्राब्दियों तक सामना करते हुए भी हम सांस्कृतिक मान्यताओं को अक्षुण्ण रख पाए, यह हमारी संस्कृति की ही जिजीविषा की परिचायक है । भारतीय संस्कृति के पोषण में यहां के जनजातीय समुदायों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है । जनजातीय समुदायों ने सदियों तक दुर्गम जीवन व्यतीत करते हुए भी अपनी विरासत को सहेजकर रखा तथा आने वाली पीढ़ियों को हस्तांतरित किया । बहुत सारे विदेशी और भारतीय इतिहासकारों, शोधकर्ताओं ने अपने-अपने तरीके से जनजातीय समुदाय को परिभाषित करने का प्रयास किया है । समाजशास्त्रियों का मत रहा है कि छोटे-छोटे जनसमूहों में एक निश्चित स्थान पर रहने वाले समाज को जनजाति कहा जाता है । आमतौर पर एक जनजाति में एक जैसी भाषा, वेशभूषा, रीति-रिवाज मिलते हैं।

यूरोपियन लोग जब विश्व के अन्य भागों में गये, तो उन्होंने वहां के स्थानीय निवासियों को जनजाति या ट्राइब के नाम से संबोधित किया। उदाहरण के तौर पर अफ्रीका, अमेरिका, एशिया, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और भारत में अंग्रेजों ने यहां के रहने वालों को ट्राइब कहना शुरू किया, जो भारत में धीरे-धीरे आदिवासी के नाम से प्रचलित हुआ। डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर ने भारतीय समाज का गहराई से अध्ययन किया और उन्होंने पाया की भारतीय समाज में ऊपरी मतभेद है, लेकिन अंदरूनी रूप में संगठित, समरस तथा भेदभाव रहित हैं । रामायण में श्रीराम वनबंधुओं के साथ ही आततायी रावण का वध करते हैं । प्राचीन काल से आधुनिक काल तक चाहे चाणक्य द्वारा प्रेरित चंद्रगुप्त के साथी हों या महाराणा प्रताप के साथ अनवरत रहने वाले भील हों या फिर शिवाजी महाराज का

साथ देने वाले वनवासी समुदाय हों या वासुदेव बलवंत फड़के का स्वंतत्रता संग्राम में साथ देकर अपना सर्वस्व देने की भूमिका में कोली, भील व धनगर जनजाति समुदाय के बंधु हों सभी ने अपने-अपने ढंग से स्वतंत्रता संघर्ष में अपनी भूमिका अदा की ।

संगोष्ठी का उद्देश्य:

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में भारत की विभिन्न जाति/जनजाति समुदायों की आंतरिक सांस्कृतिक एकता को चिन्हित करने का प्रयास किया जाएगा ।

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ :

1. **शोध सारांश भेजने की अंतिम तिथि – 05 फरवरी 2018**
2. **शोध पत्र भेजने की अंतिम तिथि - 15 फरवरी 2018**
3. **शोध सारांश/शोध पत्र आप हिंदी/अंग्रेजी दोनों में भेज सकते हैं ।**
4. **शोध सारांश एवं शोध पत्र हिंदी के लिए कृतिदेव 10 फॉण्ट और अंग्रेजी के लिए Times New Roman 12 फॉण्ट का प्रयोग करें ।**
5. **चयनित शोध आलेखों को प्रकाशित किया जायेगा ।**

सेमीनार से संबंधित किसी भी सूचना के लिए आप जनजातीय अध्ययन पीठ, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं ।

संपर्क : +91- 8894446159, 7289991959.

ईमेल : tribalchair.cuhp@gmail.com;

satishganjoo@hotmail.com;